भजन

छत्रसाल जी को पहले, जिनकी पूर्ण पहचान
और वो बारह मोमिन, जो निकले होने कुर्बान
करके प्रणाम तुमको हम, करके प्रणाम तुमको हम

1 कहते हैं रूह का ईमान हम, हुआ साहेब का जैसा हुक्म
वक्त आखिर का है अब तो कम, धाम चलना है अब संग खसम

2 ईमां ही पूजा रूहों की, ईमां ही तीर्थ रूहों का
ईमान ही है बंदगी, ईमान खुदा रूहों का
कभी डोले नहीं ईमां रूहों का, ईमान ही रूहों का बल

3 दुख में ईमान डोले नहीं, माया में पिऊ को तोले नहीं–2
चाहे तिल तिल ही करना पड़े, रूहें ईमान छोड़े नहीं
कभी बदले नहीं पीछे हटते नहीं, हादी कदमों पर रखते कदम

4 दुनिया का जो है ईमान, छिपा रहता है उसमें तो मान
रूह का अपना तो कुछ भी नहीं, वो तो प्रीतम पे हैं कुर्बान
है मुसल्लसल ईमान, इक है इम्तिहान –2
मैं खुदी का भी ना हो भरम

5 नाता अर्श का जाना है जो, वो फर्श पे निभाना है वो
जाहिर है सरूप युगल, प्रीतम को बताना है वो
छत्रसाल जी की तरह ईमान हो छत्रसाल जी की तरह पहचान हो
और मर्यादा को छोड़े हम
यही रूहों का ईमां खसम, यही रूहों का ईमां